अनोखा संसार

कहानी: मंजू गुप्ता

चित्र: अजंता गुहाठाकुरता

Room to Read®

World Change Starts
with Educated Children.®

IN-LLP-08-0013_Text_AnAmazingWorld.indd 1 6/19/23 08:47

राजस्थान के एक गाँव में हर साल सीताबाड़ी का मेला लगता है। इस साल मेले में लालचंद ने पगड़ियों की दुकान लगाई। उसने बेचने के लिए तो राजस्थानी पगड़ियाँ रखीं पर दुकान को देश भर में पहने जाने वाली दूसरी पगड़ियों से भी सजाया।

तरह-तरह की पगड़ियों की वजह से इस दुकान की बातें सभी जगह हो रही थीं। मेले में भी और आस-पास के गावों में भी। तरह-तरह की पगड़ियों को देखकर लोग अचरज में थे।

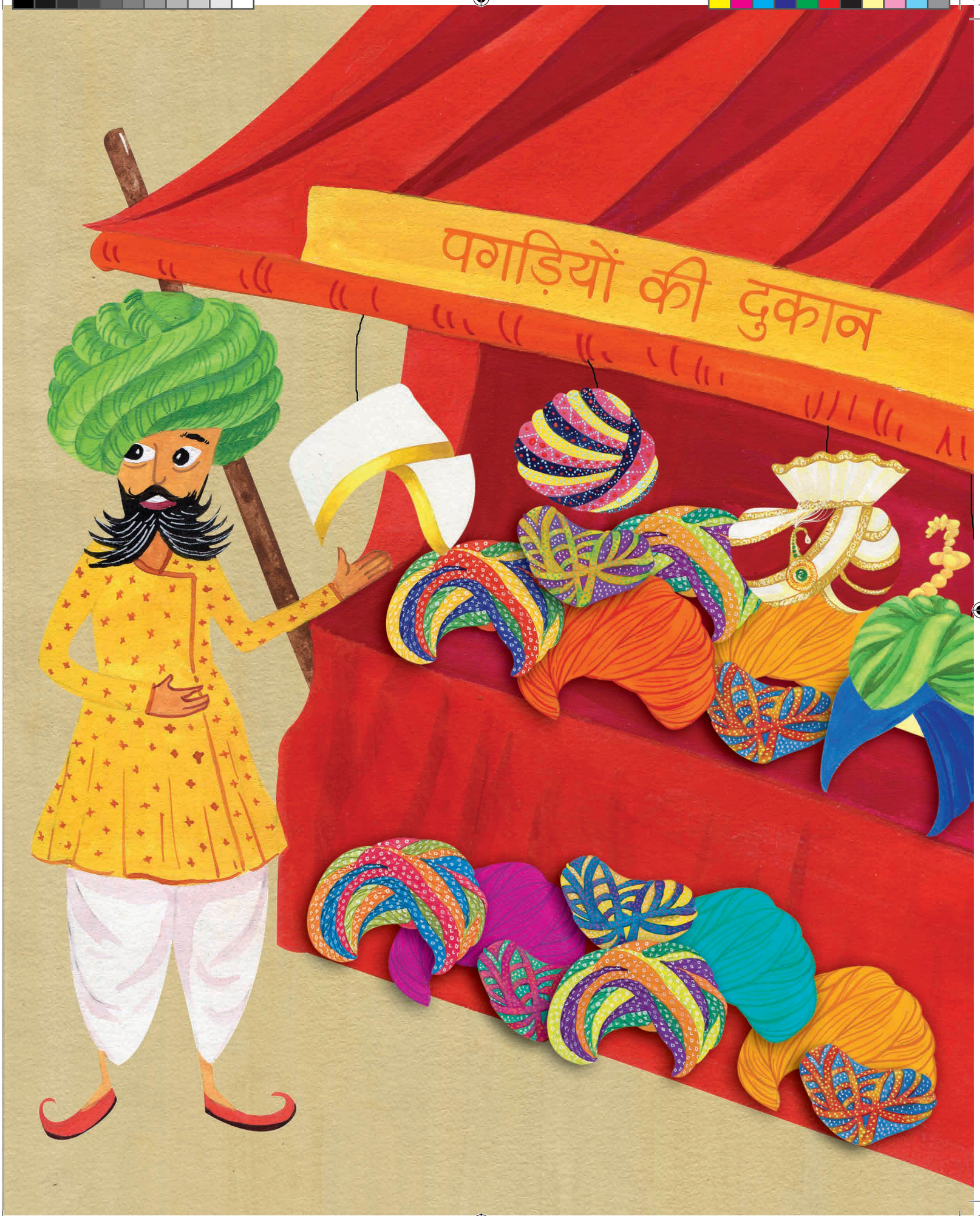

IN-LLP-08-0013_Text_AnAmazingWorld.indd 3 6/19/23 08:47

IN-LLP-08-0013_Text_AnAmazingWorld.indd 4 6/19/23 08:47

धीरे-धीरे रात गहराने लगी। झूले और मिठाईयों की दुकानें भी बंद होने लगीं। लालचंद भी अब थक चुका था, उसने पगड़ियों की दुकान बंद की और सोने चला गया। अब पगड़ियाँ बिल्कुल अकेली थीं तो चल पड़ा आपस में परिचय का दौर।

राजस्थानी पगड़ी ने कहा–

रंगों से भरी मैं,
फर-फर उड़ी मैं।
राजाओं की आन रही हूँ,
और सभी की शान रही हूँ।

IN-LLP-08-0013_Text_AnAmazingWorld.indd 7 6/19/23 08:47

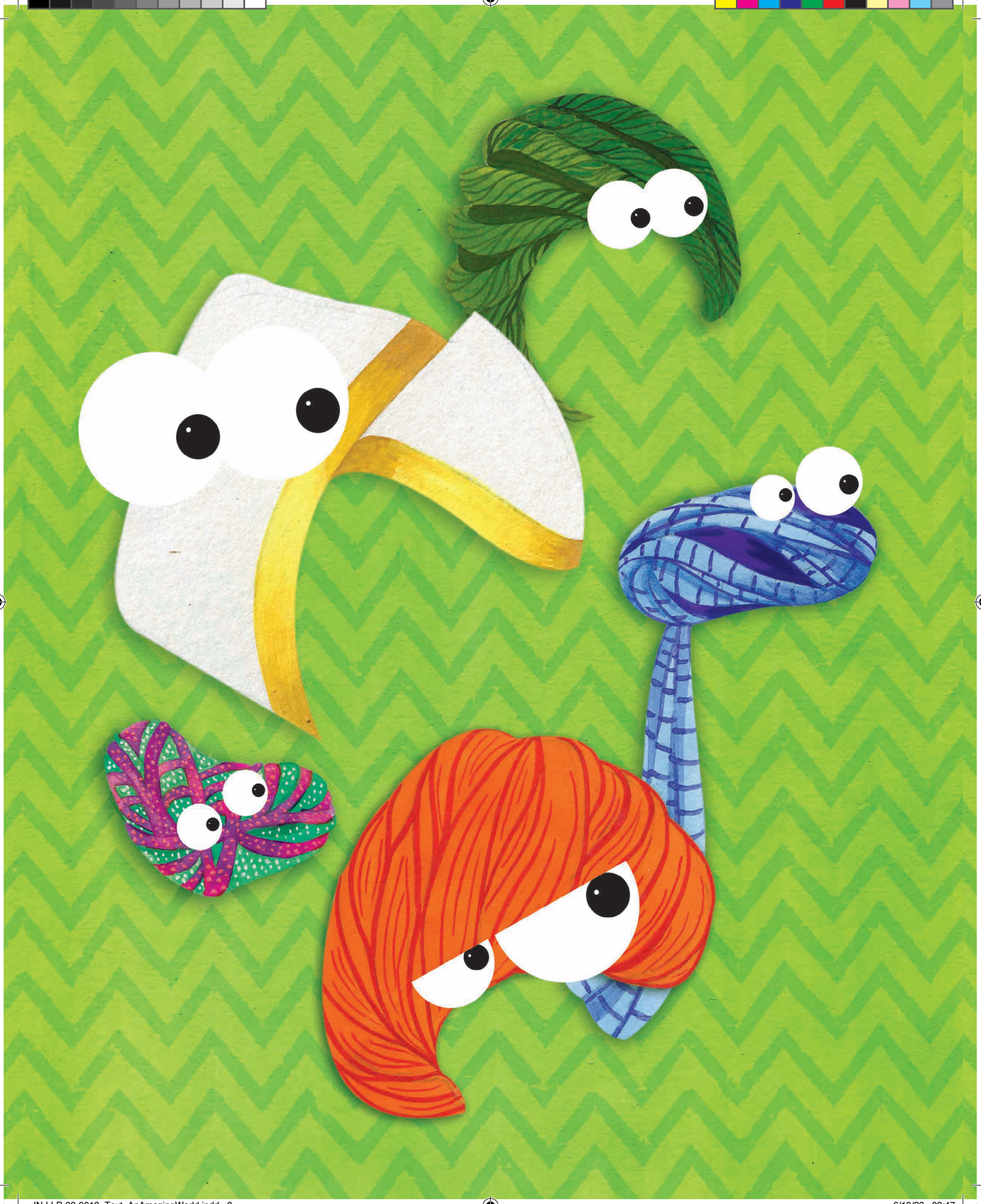

IN-LLP-08-0013_Text_AnAmazingWorld.indd 8 6/19/23 08:47

पंजाब की पगड़ी ने नाचते-गाते हुए कहा-

बल्ले-बल्ले !
सरदार की पगड़ी मतवाली,
भंगड़ा मेरे बिना है खाली।

अब सबसे अलग दिख रही सुंदर-सजीली पगड़ी की बारी थी। उसने कहा-

मैं हूँ दूल्हे की पगड़ी,
मुझे न समझो अगली-पगली।
मैं दूल्हे की शान हूँ,
और बारात की जान हूँ।

IN-LLP-08-0013_Text_AnAmazingWorld.indd 11 6/19/23 08:47

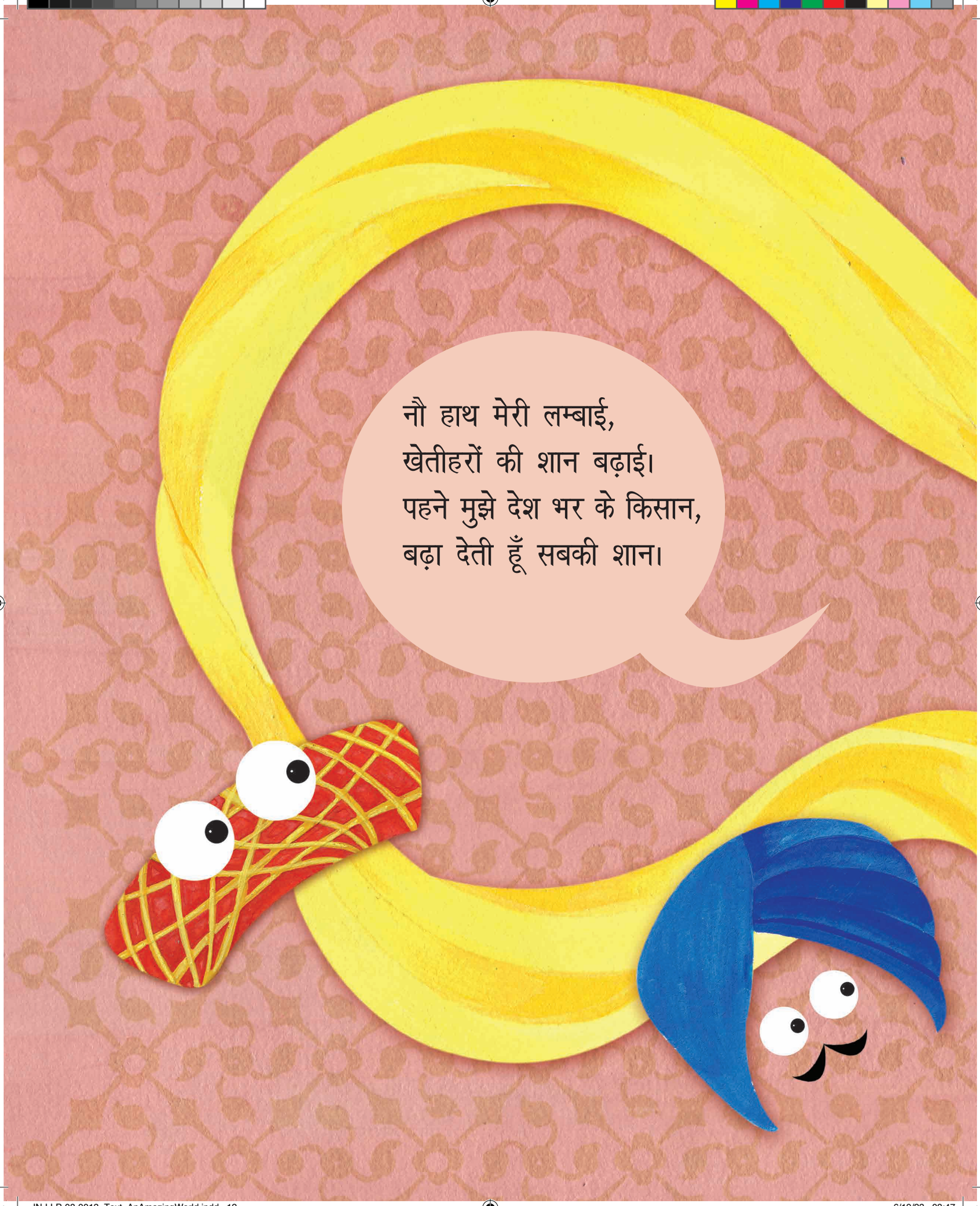

IN-LLP-08-0013_Text_AnAmazingWorld.indd 12 6/19/23 08:47

सभी पगड़ियाँ उसकी लम्बाई देख कर आँखें
फाड़-फाड़ कर उसे देखती रह गईं।

अब आखिरी पगड़ी जो बड़ी देर से टुकुर-टुकुर सबको देख रही थी। वह मुस्कुराई और बोली-

मोटा-मोटा मेरा सेठ,
तोंद निकाल कर जाता लेट।
पहचाने हैं मुझे सभी,
मैं हूँ मारवाड़ी की पगड़ी।

आधी रात बीत चुकी थी, पर पगड़ियाँ अभी भी अपनी बातों में इतनी मस्त थीं कि उन्हें समय बीतने का आभास ही नहीं हो रहा था। पूरा मेला सो चुका था, पर पगड़ियों की दुकान से बतियाने की आवाज़ें अभी भी आ रही थीं।

सुबह हो गई।

लालचंद सो कर उठा और दुकान का परदा हटा दिया। धीरे-धीरे बच्चों की भीड़ दुकान के सामने इकट्ठी हो गई। लालचंद, पगड़ियाँ और बच्चे सभी बहुत खुश थे।